मक्तूबे मुल्तानी

लेखक
हज़रत बन्दगी मियाँ
सय्यद ख़ुदंमीर सिद्दीक़े विलायत रज़ी०

अनुवादक
श्री शेख़ चाँद साजिद

इदारतुल इल्म महेदवियह इस्लामिक लाइब्रेरी
मर्कज़ी अंजुमने महेदवियह बिलडिंग,
चंचलगुडा, हैदराबाद - ५०० ०२४.

अर्ज़े नाशिर

तमाम प्रशंसा अल्लाह तआला के लिये है जिसने हमारे मार्ग दर्शन के लिये अपने रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० और ख़लीफ़तुल्लाह हज़रत सय्यद मुहम्मद महेदी मौऊद अले० को भेजा और हमें उन दोनों की तस्दीक़ की नेमत प्रदान की।

अल्लाह के अंतिम रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० ने अपने बाद अल्लाह के एक ऐसे ख़लीफ़ा के आने की शुभसूचना दी जो उनकी ही संतान में से होगा, जिसका नाम भी मुंहम्मद होग, जिसका स्वभाव भी मुहम्मद सल्ला० के जैसा होगा, जो मुहम्मद सल्ला० का ताबे ताम (परिपूर्ण अनुचर) होगा, लोगों को अल्लाह की ओर बुलाएगा, शुद्ध इसलाम धर्म का प्रचार करेगा, उम्मत को हलाकत से बचाएगा, और उनका लक़ब महेदी होगा, जिनका इनकार करना और झुटलाना कुफ़्र है। क़ुरआने मजीद में महेदी अले० और उनकी क़ौम का ज़िकर सांकेतिक रूप में किया गया है। इसके अलावा ३०० से अधिक अहादीस में भी महेदी का ज़िकर मिलता है, लेकिन महेदी की अलामतों और आगमन-काल के विषय में अनेकता पाई जाती है। इस लिये पूर्वज उलमा ने सर्वसम्मति से यह नतीजा निकाला कि महेदी फ़ातिमा रज़ी० की संतान से होंगे और अल्लाह तआला उन्हें जब चाहेगा पैदा करेगा। इस पुस्तक के संबंध में कहा जाता है कि बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० ने यह मक्तुब देकर मियाँ हाजी को तब्लीग के लिये मुल्तान भेजा और वहाँ बहुत सारे लोग उस से फ़ैज़याब हुवे। यह भी कहा जाता है कि हुमायूं बादशाह ने इस मक्तूब को सोने के पानी से लिखवाकर पढ़ने के लिये रखा था और वह साकित और माइल ब तस्दीक़ था। उसके दो भाई हिंदाल और कामरान हज़रत महेदी अले० की तस्दीक़ से मुशर्इफ़ हवे थे।

हिन्दी पढ़ने वालों की सहूलत के लिये जनाब शेख़ चाँद साजिद साहब ने उपर्युक्त रिसालों का हिन्दी अनुवाद किया है जो इस संस्था की ओर से प्रकाशित किया जा रहा है। अल्लाह तआला से दुआ है कि सत्यता की खोज करने वालों के लिये इसको मार्ग दर्शक बनाए और अनुवादक और छपाई में सहयोग देने वालों को पुण्य अता फ़र्माए। *आमीन*

फ़क़ीर सैयद हुसेन मीराँ
प्रबंधक, इदारतुल - इल्म
महेदवियह इस्लामिक लाइब्रेरी

मक्तूबे मुलतानी

वही हिदायत करने वाला है। अल्लाह तआला जिसको चाहता है सीधी राह दिखाता है। जिसे अल्लाह हिदायात दे वही (हिदयत की) राह पर आयगा और जिसे गुमराह करे तो उसको (हिदायत की) राह पर लाने वाला कोई गुरू नहीं मिलेगा। तमाम ताअरीफ़ अल्लाह के लिये है जिसने हम को उस (महेदी अले०) का मार्ग दिखाया। अगर अल्लाह हम को हिदायत न करता तो हम राह पाने वाले न थे। बेशक हमारे परवर्दगार के रसूल हक़ लेकर आए। ऐ अल्लाह मेरे लिये इस तहरीर को आसान कर।

शुरू करता हूँ मैं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है। और उसी पर मेरा भरोसा है।

(नीचे शेख़े अकबर मुहियुद्दीन इब्ने अरबी रहे० की नज़्म का अनुवाद है)

मुहर कर्दा लिफ़ाफ़ा मुश्तमल बर राज़े सर बस्ता
मैं हूँ हम्दे ख़ुदा में और मक़ामे हम्द बर तर है
उसी से ख़ुश हूँ पर क़ासिर यही बस बोझ दिल पर है
तअज्जुब है मुझे फ़र्हत पे अपनी है क़रीं क्योंकर
दिले ग़मदीदा से जिसमें नुज़ूले ग़म फ़ुज़ूं तर है
किया है मुझ पे मुम्किन कश्फ़ अपने बहरे हस्ती का
हक़ाइक़ का तलातुम दिल पे हैरत ख़ेज़ मन्ज़र है

वही है जो हमेशा नूर से अपने हुवेदा है
सदफ़ पे जिस्म के ठेरे न नूर उसका वह गौहर है
नहीं मुझको तअज्जुब जिस्मे नूरानी पे कुछ अपने
तअज्जुब नूरे क़ल्बी पर है क़ायम यह भी क्योंकर है
अगर है कश्फ़ से और मख़ज़ने ख़ासे विलायत से
तो नूरे तजल्लिये हक़ दिल पे फिर क़ाइम मुक़र्रर है
हुवा आगाह हक़ीक़त से तो कर इल्लत का अंदाज़ा
के राय ख़ल्क़ क्या दानायो इल्मे ज़ात बर्तर है
वुजूदे ज़ाते हक़ है इल्म में आने से बाला तर
किया है मुझ से जो अहदे अता बख़शिष का ख़ूगर है
ख़ुशा क़ासिद मेरे रब का के आया यह ख़बर लेकर
के ख़त्मुल औलिया का हो चुका आना मुक़र्रर है।

इस नज़म में कवी ने इसी अम्र (विषय) की तरफ़ इशारा किया है कि रसूलुल्लाह सल्ल ल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम से खातिमुल औलिया की ताअईन (निर्धारित करने / निर्दिष्टी करण) के बारे में ख़बर आई है, और आरिफ़ौं ने कहा है कि पैग़मबरौं का भेजना खुदा वंद अर्हमुर - रहिमीन की हिकमत में वाजिब है, इस लिये कि उस मालिक वाजिबुल वुजूद को अपने बन्दौं पर फ़रमान लाज़िम है और अगर ख़ुदाए पाक व बर्तर बग़ैर किसी वास्ते (माध्यम) के बशर से कलाम करे तो हर फ़र्द बशर को उसके सुन्नै की ताब व ताक़त नहीं है, इस लिये जिन्से बशर (मानव जाति) से ऐक ऐसा शख़्स चाहिये जो ख़ुदा का फ़र्मान ख़ल्क़ (लोगौं) को पहुंचाए। सब पैग़म्बर इसी लिये मबऊस हुवे कि

शरीअत (कानूने इलाही) को ख़ल्क़ पर ज़ाहिर करें ता कि वह शरीअत आलम (संसार) के निज़ाम (व्यवस्था) और औलादे आदम अले० की सलाह व फ़लाह (सत्यनिष्ठता और कल्याण) का सबब् बने और अहवाले ज़ाहिरी जो क़ालिब यानि जिसम से तअल्लुक़ रखत हैं मुस्तहकम हों और उनका इस्तेहकाम (दृढ़ता) तस्दीक़ और इख़्लासे क़ल्बी के बग़ैर मुहालात (असंभव) से है। तमाम उलमाए पसंदीदा अक़वाल और सालिहीन सतूदा अफ़आल ने इस बात पर इत्तेफ़ाक़ किया है कि जैसा कि अर्हमुर-राहिमीन की हिकमत में पैग़म्बरौं की बेसत वाजिब है वैसा ही ऐक शख़्स वली-ए-कामिल का मब्ऊस होना भी लाज़िम है जो कि रसूलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलायत का मुज़्हिर और आप सल्ला० की मुम्लिकत के अस्क़ाल का हामिल हो ता कि अहकामे उसूल उसके वास्ते से ज़ाहिर हों और अस्रारे हक़ीक़त को आलमे शरीअत में बयान फ़र्माए और तमाम अहकाम में रसूलुल्लाह सल्ला० की मुताबिअत (अनुकरण) करे और तमाम ज़ाहिर व बातिन में रसूलुल्लाह सल्ला० के साथ निस्बत रखता हो, जैसा कि मुक़र्रर है कि हर नबी के लिये उसकी उम्मत से ऐक नज़ीर (समान) है। साहबे *गुलशने राज़* फ़र्माते हैं।

उसी के है हर ऐक परतो का हासिल
बिल आख़िर ऐक का दीगर मुक़बिल
है अब हर आलिम (कामिल) अज़ उम्मत
मुक़ाबिल एक नबी का दर नबूवत

यह मर्तबा (मुज़्हिरे विलायते रसूल सल्ला० और अस्क़ाले मुम्लिकते रसूल सल्ला० का हामिल होना) तमाम औलिया के लिये नहीं जिन को

विलायते मुत्लक़ा से फ़ैज़ पहुंचता है बल्कि यह मर्तबा ख़ास ख़ातिमे विलायत का है कि विलायते मुक़य्यदा उस की ज़ात में ज़ाहिर होती है, इस लिये तमाम राहे हक़ पर चलने वालौं और ज़ाते मुत्लक़ के ढूंडने वालौं ने नूरे मुहम्मदी की, जिसकी तारीफ़ में फ़र्माने रसूल सल्ला० है ''सब से पहली चीज़ जिसको अल्लाह ने पैदा किया मेरा नूर है'' दो वज्हें साबित की हैं, ऐक विलायत दूसरी नबूवत और दोनों वज्हौं की तम्सील में आफ़ताब (सूर्य) और महताब (चाँद) को लाते हैं। विलायत को आफ़ताब से तम्सील (उदाहरण) देते हैं और नबूवत को महताब से और तमाम अम्बिया और औलिया को मनाज़िल क़रार देते हैं। चुनांचे *मस्नवी गुलशने राज़* में है - (अनुवाद)।

नबी का नूर है ख़ुरशीद बर्तर
कभी मूसा कभी आदम से ज़ाहिर

बयान करते हैं कि हज़रत आदम अले० से दीन की सुब्ह हुवी और हज़रत मुस्तफ़ा सल्ला० से वक़्ते इस्तेवा (दोपहर) होकर दीन का दिन पूरा हुवा, चुनांचे मसनवी में है।

नबूवत ने ज़हूर आदम (अले०) से पाया
कमाल उसका है ख़ातिम से हुवेदा
नबी का अहद वक्ते इस्तेवा था
कि था हर ज़िल व ज़ुल्मत से मुसफ़्फ़ा।

चुनांचे हक़ तआला क़सम खाता है ''और क़सम दिन की जब कि वह रोशन हो''। उसी वक़्ते इसतिवा की तरफ़ इशारा हक़ तआला की क़सम में है। जब आफ़ताब (सूर्य) की सैर मन्ज़िले मुस्तफ़वी में इस्तिवा

को पहुंची और उसका ज़हूर बदर्जय कमाल हुवा और उसका फ़ैज़ तमाम अहले आलम को पहुंचा और हर क़ाबिल ने अपना बहरा (फ़ैज़) लिया तो फिर आफ़ताब ढला और उस ने अपना दूसरा दौर शुरू किया। मसनवी।

विलायत थी जो बाक़ी हो के सायर
किया दौरे दिगर जूँ नुक़ता दायर

इस अम्र कि तरफ़ इशारा है कि जब मुस्तफ़ा सल्ला० ने दुन्या से सफ़र फ़रमाया तो आप की विलायत का फ़ैज़ (ज़ाहिर होना) बाक़ी रहा ता कि ज़ाते महेदी अले० में ख़तम हो और नुक़तय विलायत का दौर उसी फ़ैज़ान में तमाम हो। मसनवी।

है मज़्हरे कुल विलायत का जो ख़ातिम
मुकम्मल उस से होवे दौरे आलम
हैं जुमला औलिया जूं उस के आज़ा
के वह कुल और सब हैं उस के अजज़ा

यानि तमाम अहले हक़ीक़त ने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया है कि विलायते मुस्तफ़ा सल्ला० ज़ाते महेदी अले० में ख़तम होगी और सब मुहक़्क़िक़ीन ने हज़रत महेदी अले० को ख़ातिमे विलायते मुस्तफ़ा अले० कहा है और आप अले० का ज़हूर क़ियामत से पहले साबित किया है और कहा है कि जब तक महेदी अले० का ज़हूर ने हो विलायते मुहम्मद सल्ला० का ज़हूर पूरा नहीं होगा। अगरचे विलायत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० की ज़ात में थी लेकिन पोशिदा थी, उस को ज़ाहिर करने की आँहज़रत सल्ला० ने इजाज़त नहीं पाई बल्कि आप इज़हारे

शरीअत पर मामूर थे। पस वह हसनय विलायते मुहम्मदी बाक़ी रह गया था ताकि महेदी अले० का ज़हूर होकर महेदी अले० की ज़ात में ख़तम हो। चुनांचे (साहबे *फ़ुतूहाते मक्किया* ने) कहा है कि आँहज़रत सल्ला० मक़ामे रिसालत में शरीअत के साथ हमेशा ज़ाहिर रहे और ज़ाहिर नहीं फ़रमाया अपनी विलायत को अहदियते ज़ातिया के साथ जो जामे है तमाम असमाय इलाहिया को कि पूरा करलेता इसमे हादी अपना हक़ पस बाक़ी रह गया यह हसना यानि आप की विलायत बातिन होकर ताकि ज़ाहिर हो ख़ातिम के मज़्हर में और इसी लिये रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें अल्लाह की याद दिलाता हूँ मेरी अहले बैत में, और बहुत सी ख़बरें रसूलुल्लाह सल्ला० से आई हैं इस बाब में कि महेदी अले० का ख़ुरूज आख़िर ज़माने में होगा, चुनांचे रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़रमाया कि अगर दुन्या की मुद्दत से सिर्फ़ एक ही दिन बाक़ी रह जाय तो अल्लाह तआला उस दिन को इतना लमबा करदेगा यहाँ तक कि उस में मबऊस हो एक शख़्स मेरी अहले बैत से जो मेरा हम नाम होगा।

इस हदीस में हज़रत मुस्तफ़ा अले० फ़रमाते हैं जब तक महेदी अले० ना आयें क़ियामत क़ायम न होगी, इस लिये कि महेदी अले० का आना ख़ुदावंद अहकमुल - हाकिमीन की हिकमत में वाजिब है। महेदी अले० के ज़हूर के बग़ैर तमाम उम्मत के लिये नजात की सूरत न होगी और आँहज़रत अले० की उम्मत विलायत के फ़ैज़ से महरूम रहेगी और हलाकत से न निकलेगी। चुनांचे नबी अले० ने फ़रमाया है ''मेरी उम्मत कैसे हलाक होगी जब कि मैं उसके शुरू में हुँ ईसा (अले०) उसके आख़िर में हैं और महेदी (अले०) मेरी अहले बैत से उसके वस्त

(मध्य) में हैं।'' तमाम मशाइख़ीन रहे० ने इस अम्र (विषय) पर इत्तिफ़ाक़ किया (सहमत हैं) कि महेदी मौऊद अले० के ज़माने मे हक़ तआला का फ़ैज़ दुन्या वालौं के दिलौं पर ऐस ही पहुंचेगा जैसा कि रसूलुल्लाह सल्ला० के ज़माने में पहुंचा था। ख़ातिमे नबूवत और ख़ातिमे विलायत के ज़माने में उन्हो ने कोई फ़र्क़ नहीं किया और ख़ातिमे विलायत को भी रहमतुल - लिल आलमीन (तमाम जहानौं के लिये रहमत) कहा है और इस अक़ीदे पर दलाइल कलामे ख़ुदा और फ़रामीने रसूलुल्लाह सल्ला० से लाते हैं।

नबी सल्ला० ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत उस बारिष (वर्षा) के मानिंद है जिस की निसबत मालूम नहीं होता कि उसका अव्वल अच्छा है या उसका आख़िर। इन ख़ब्रौं से उन्हों ने हज़रत महेदी अले० का ज़माना ही मुराद लिया है और बहुत सी ख़ब्रें उसी तरह की बयान की गई हैं, जैसा कि फ़रमाया नबी सल्ला० ने कि उस (महेदी) से आसमान और ज़मीन के रहने वाले राज़ी (संतुष्ट) होंगे, आसमान अपनी बारिष के क़त्रात से कुछ भी नहीं छोड़ेगा सब गिरादेगा और ज़मीन अपने पौदौं से कुछ नहीं छोड़ेगी सब कुछ उगा देगी यहाँ तक कि ज़िन्दे मुर्दों के बारे में तमन्ना (कामना) करेंगे कि काश उनके मरे हुवे लोग जीवित होते। इस हदीस से मुराद यह लेते हैं कि बारिश मुवाफ़िक़ पड़ेगी और ज़मीन से तमाम क़िसम के ग़ल्ले उगेंगे जिन से अहले ज़माना अपना पेट भरेंगे और अपने मुर्दों के लिये भी कामना करेंगे कि काश वह भी ज़िन्दा होते और अपने पेट भरते। अपनी नादानी के सबब् से वे यह कहते हैं कि जो कुछ हदीस में कहा गया है सैयद मुहम्मद के ज़माने में नहीं हुवा और इसी कारण मुख़ालिफ़त करते हैं और मुतलक़ ग़ौर नहीं करते कि यह

तावील नस्से कुरआनी, सुन्नते इलाही और अंबिया और औलिया के अहवाल के मुख़ालिफ़ होती है, क्यों कि ख़ुदा तआला ने हज़रत आदम अले० से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० तक किसी भी नबी को इस लिये नहीं भेजा कि दुन्या वाले उसके वास्ते से दुन्या और अपने नफ़्स की मुराद हासिल करें, बल्कि अम्बिया अले० को ख़ुदा तआला ने इस लिये भेजा कि ख़लक़ (लोगौं) को दुन्या के बखेड़ौं और उस की लज़्ज़तौं से बाहर करें और ख़ुदा तआला की ताअत और इबादत की तरग़ीब दें। चुनांचे नबी सल्ला० ने फ़रमा कि ''नहीं भेजे गये अम्बिया कभी मगर इस लिये कि भगायें लोगौं को दुन्या से ख़ुदा की तरफ़''। हक़ सुब्हानहु तआला अपने कलाम में ख़बर देता है कि जिस किसी ज़माने में अल्लाह ने अपने रसूल को भेजा तो उस ज़माने के लोगौं को बग़ैर आज़्माइश (परीक्षा) के नहीं छोड़ा। चुनांये फ़रमाता है *''और हमने जिस बस्ती में भी कोई नबी भेजा, उसके बाशिन्दों को हमने सख़्ती और मुसीबत में मुब्तिला किया ताकि वे गिड़गिड़ायें''* (७:९४)। जब उन्हों ने बारीए तआला की जनाब में आजज़ी और ज़ारी करने से और रसूल की नसीहत पर चलने से मूंह फेरे रहे तो हक़ तआला ने उनकी मुरादौं के दर्वाज़े उनको हलाक करने के लिये खोल दिये। चुनांचे अल्लाह तआला फ़रमाता है *''फिर जब उन्होंने उस नसीहत को भुला दिया जो उन्हें की गई थी तो हमने उन पर हर चीज़ (दुन्यवी नेमतौं) के दरवाज़े खोल दिये। यहां तक कि जब वे उन चीजौं को पाकर ख़ुश होगये जो उन्हें दी गई थी तो हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया। उस समय वे ना उम्मीद होकर रह गये''* (६:४४)। इसी तरह अल्लाह तआला फ़रमाता है *''और अगर अल्लाह अपने बन्दौं के लिये रोज़ी को खोल देता (विस्तृत*

कर देता) तो जरूर वे ज़मीन में सरकशी (अहंकार) करने लगेंगे, लेकिन वह मुनासिब मिक़दार में हर एक की जितनी रोज़ी चाहता है उतारता है, बेशक वही अपने बन्दों के हाल को जानने वाला देखने वाला है'' (४२:२७)।

दूसरी आयतें भी बुहत मश्हूर हैं जो इस बात पर दलालत करती हैं कि अम्बिया अले० के भेजने में हिकमत यही है कि लोगौं को उनके वास्ते से ख़ुदा तआला की तौहीद और मारिफ़त हासिल हो। पस यही मानना लाज़िम होता है कि हज़रत महेदी अले० को जो ख़ातिमुर - रूसुल अले० के ताबे ताम हैं हक़ सुब्हानहु व तआला ने इसी माना के लिये भेजा और इस हदीस का मतलब यह है कि तमाम फ़रिश्ते और मोमिनीन महेदी अले० से राज़ी होंगे और आस्मान और ज़मीम के रहमत के दरवाज़े खुल जाऐंगे और क़ुबूल करने वालौं के दिलौं पर फ़ैज़े इलाही पूरा बर्सेगा और आप अले० ही के वास्ते से मोमिनौं के दिलों में तौहीद व मारिफ़त और मुहब्बते इलाही के जो असरार होंगे ज़ाहिर हो जाऐंगे इस शान से कि ज़िन्दे अपने मुरदों के लिये यह आरज़ू करेंगे कि काश वह भी हज़रत महेदी अले० के ज़माने में होते तो उनको भी यह फ़ैज़े इलाही पहुंचता। यह हदीस उस हदीस की तफ़सीर है जो ऊपर बयान हुवी कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० ने अपनी उम्मत की तमसील (उदाहरण) बारिश से दी और फ़रमाया कि मालूम नहीं होता कि उसका अव्वल अच्छा है या आख़िर।

अकसर अहादीस और रिवायात जो हज़रत महेदी अले० के हक़ में बयान हुवी हैं और उनमें जो अलामात और आसार बयान किये गये

हैं वह सब हज़रत सैयद मुहम्मद महेदी अले० के सिद्क़ (सत्यता) पर दलालत करती हैं और आप अले० के अहवाल के साथ उनकी मुवाफ़िक़त (अनुकूलता) ही साबित होती है। बाज़ हदीसौं मे सिर्फ़ आप अले० की ज़ात का ज़िकर है और बाज़ अहादीस में आप के साथ असहाब रज़ी० की शान भी बयान हुई है। चुनांचे फ़रमाया हज़रत रसूलुल्लाह सल्ला० ने ''बेशक मैं जानता हूँ ऐसे लोगौं को जो मेरे मक़ाम के होंगे, सहाबा सज़ी० ने कहा यह बात कैसे होगी या रसूलुल्लाह आप तो ख़तिमुन् - नबीईन हैं और आप के बाद कोई नबी नहीं है, आँहज़रत सल्ला० ने फ़रमाया वह न अम्बिया होंगे न शोहदा लेकिन अम्बिया और शोहदा उन पर रश्क करेंगे और वह अल्लाह के वास्ते आपस में मुहब्बत रखने वाले होंगे।

एक हदीस में है कि आँहज़रत सल्ला० ने हज़रत अबूज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ी० से फ़रमाया ऐ अबूज़र क्या तुम जानते हो कि मैं किस ग़म में और किस फ़िकर मे हूँ और किस चीज़ की तरफ़ मेरा इश्तियाक़ (उत्सुकता) है। अस्हाब रज़ी० ने अर्ज़ किया था रसुलुल्लाह सल्ला० हम को अपने ग़म और फ़िकर से आगाह फ़रमाइये। आप सल्ला० ने फ़रमाया आह! मेरे भाइयौं की मुलाक़ात का शौक़ है जो मेरे बाद होने वाले हैं कि उनकी शान अम्बिया की शान होगी और वह अल्लाह के पास शहीदौं के दरजे में होंगे। ख़ुदा तआला की ख़ुशनोदी (प्रसन्नता) के लिये वह अपने माँ-बाप, भांइयों, बहनों और बच्चों से तक गुरेज़ (पलायन) करेंगे, अपना सब माल और मताअ अल्लाह के वास्ते छोड़ देंगे और अपने नुफ़ूस को तवाज़ो से गिराए रहेंगे, शहवतौं और दुन्या की फ़ुज़ूलियात में नहीं डूबेंगे, मसजिदौं में रहा करेंगे, (अपने नुक़साने

बातिनी से जो सैर इलल्लाह में महसूस हो) मग़मूम (और सैर फ़िल्लाह में तजल्ली के फ़िराक से) महज़ून (दुःखित) रहेंगे अल्लाह की मुहब्बत (दिलों में जागुजीं होने) से। उनके दिल अल्लाह ही ज़र्फ़ (पात्र) होंगे और उनका आराम अल्लाह ही (के क़ुर्ब) से होगा और उनका हर काम अल्लाह के लिये होगा। यह हदीस *तमहीद* में बयान की गई है, और बहुत सी बुज़ुरगियाँ और नवाज़िशात इस गिरोह के हक़ में (रसूलुल्लाह सल्ला० ने) बयान फ़रमाए हैं। इसके बाद फ़रमाया ऐ अबूज़र मैं उनका और उनसे मिलने का मुश्ताक़ (इच्छुक) हूँ, फिर थोड़ी देर आप ने अपना सर झुका लिया फिर आप सर उठाए और रोये यहाँ तक कि आपकी आँखों से आंसू बहने लगे। फिर आप ने फ़रमाया आह मुझे उनकी मुलाक़ात का शौक़ है, और फ़रमाने लगे ऐ अल्ला तू उनकी हिफ़ाज़त फ़रमा और उनको उनके दुश्मनों पर फ़तह दे और क़ियामत के दिन उन से मेरी आँखें ठंडी फ़रमा। फिर आँहज़रत सल्ला० ने यह आयत पढ़ी *''आगाह रहो कि अल्लाह के दोसतों पर न कोई ख़ौफ़ तारी होता है और न वह ग़मगीन होते हैं''* (१०:६२)।

दूसरी हदीसों में महेदी अले० के हक़ में यह भी बयान किया गया है कि फ़रमाया नबी सल्ला० ने दुन्या की मुद्दत पूरी नहीं होगी यहाँ तक कि अल्लाह मेरे अहले बैत से एक शख़्स को भेजे जो मेरा हम-नाम होगा वह दुन्या को अदल-व-इन्साफ़ से भर देगा जैसा कि वह ज़ुल्म व जौर से भरी होगी।

हज़रत उम्मे सल्मा रज़ी० से रिवायत है कहा उन्हों ने मैं ने सुना है रसूलुल्लाह सल्ला० से आप फ़रमाते थे कि महेदी मेरी इत्रत (कुल) से फ़ातिमा की औलाद से है। (अबू दाऊद)

अबू सईद ख़ुदरी रज़ी० से रिवायत है कहा उन्हों ने फ़र्माया रसूलुल्लाह सल्ला० ने महेदी मुझ से है रोशन पेशानी, बुलंद नाक और पैवस्ता अब्रू वाला।

अबू सईद ख़ुदरी रज़ी० से रिवायत है कि नबी सल्ला० ने फ़रमाया कि महेदी के पास एक शख़्स आएगा और कहेगा ऐ महेदी मुझे अता की जिये, पस वह इतना देगा जितना कि वह उठा सके। बाज़ लोगौं ने इस हदीस के बारे में बन्दगी मीराँ सैयद मुहम्मद महेदी मौऊद अले० से सवाल किया तो जवाब में यह बैत पढ़ीः

ऐ बेख़बर जहाँ माना
क्या तुझ से करूँ बयाँ माना

अबू सईद ख़ुदरी रज़ी० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने एक बला का ज़िकर फ़रमाया कि इस उम्मत पर पड़ेगी यहाँ तक कि कोई शख़्स नहीं पाएगा कोई जाए पनाह (रक्षा स्थल) पस भेजेगा अल्लाह ऐक शख़्स को मेरी इत्रत से मेरी अहले बैत से, पस भर जाएगी ज़मीन उसके ज़रीए अदल-व-इनसाफ़ से जैसी कि भरी होगी जौर व ज़ुल्म से।

इन अहादीस के अलावा दूसरी ख़बरे बहुत हैं जिन में से बाज़ में तआरुज़ और इखतिलाफ़ भी वाक़े हुवा है और उलमाए सलफ़ ने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया है कि जो ख़बरें हज़रत महेदी अले० के हक़ में वारिद हुई हैं वह तवातुर (निरंतरता) के दरजे को पहुंची हैं, चुनांचे मुहद्दिसीन ने कहा है कि महेदी अले० के हक़ में नबी सल्ला० से ख़बरें अपने रावियौं की कसरत के साथ निरन्तर पहुंची हैं। मुहद्दिसीन ने यह

भी कहा है कि महेदी अले० की आमद के बारे में कोई इख़तिलाफ़ नहीं है, बल्कि इख़तिलाफ़ अलामात और आप की जाय पैदाइश (जन्म स्थान) के विषय में है। चुनांचे बाज़ौं ने कहा है कि नबी सल्ला० से रिवायत की गई है कि महेदी अले० का मक़ामे पैदाइश कबुल या हिन्द है।

बैहक़ी रहे० ने अपनी किताब '*शोबुल ईमान*' में कहा है कि लोगौं ने महेदी अले० के बारे में इख़तिलाफ़ किया तो तवक़्कुफ़ (विलबं) किया एक जमात ने और इल्म (हक़ीक़ी को) उसके आलिम पर रख छोड़ा, और एतिक़ाद रखा कि महेदा एक शख़्स औलादे फ़ातिमा रज़ी० बिन्ते रसूलुल्लाह सल्ला० से हैं जो आख़िर ज़माने में निकलेंगे।

बाज़ रिवायतें जो महेदी के हक़ में आई हैं उनमें से अकसर का ज़िकर शेख़ मुहीयुद्दीन इब्न अरबी रहे० ने अपनी किताब *फ़ुतूहाते मक्किया* में किया है। चुनांचे कहा है ''आगाह रहो बेशक अल्लाह का एक ख़लीफ़ा निकलेगा आख़िर ज़माने में जब कि ज़मीन जौर व ज़ुल्म से भरी होगी पस वह उसको अदल व इन्साफ़ से भरदेगा और ख़ुल्क़ में रसूलुल्लाह सल्ला० से मुशाबा (समान) होगा, रोशन पेशानी, बुलन्द नाक और पैवस्ता अब्रू वाला होगा, माल सवीयत से (बराबर) तक़सीम करेगा, रईयत में अदल फ़रमाएगा और झगड़े चुकाएगा, दीन के ज़ोफ़ (दुर्बलता) के समय उसका ज़हूर होगा, अल्लाह उसके ज़रीये हर उस फ़ितने को दफ़ा (निवारण) करेगा जो क़ुरआन के ज़रीये दफ़ा न होगा, एक शख़्स शाम को आयेगा उसके पास इस हाल में कि जाहिल, बख़ील और डरपूक होगा तो सुबह करेगा इस हाल में कि सब से बढ़कर आलिम, सब से बढ़कर सख़ी और सब से बढ़कर बहादुर होगा, अल्लाह

की मदद् उसके सामने चलेगी, उस ख़लीफ़ा की हयात (जीवन) पाँच या सात या नौ साल होगी, रसूलुल्लाह सल्ला० के क़दम बक़दम चलेगा और ख़ता नहीं करेगा। उसके लिये एक फ़रिश्ता होगा जो उसको सीधे रास्ते पर चलाएगा और वह उसको न देखेगा और वह करेगा वही जो कहेगा और कहेगा वही जो जानेगा और जानेगा वही जो समझेगा और समझेगा वही जो देखेगा। अल्लाह तआला उसको एक रात में आरासता करदेगा। वह इज़्ज़त देगा इस्लाम को उसकी ज़िल्लत के बाद और ज़िन्दा करेगा उसके आसार को उसकी मौत के बाद, पस ज़ाहिर होगा दीन जैसा कि वह फ़ी नफ़सिही (हक़ीक़ी) है और वह उठादेगा मज़ाहिब का इख़तिलाफ़ पस सिर्फ़ दीने ख़ालिस बाक़ी रहेगा और उस से ख़वास से बढ़कर आम मुसलमान ख़ुश होंगे और आरिफ़ाने बिल्लाह ही जो अहले हक़ाइक़ से होंगे उस से बैअत करेंग शहूद व कश्फ़ और अल्लाह की तरफ़ से उसकी माअरिफ़त पाकर उसके साथ मरदाने रब्बानी होंगे जो उसकी दावत को क़ायम करेंगे और उसके मदद्गार रहेंगे और वही वुज़रा होंगे जो उसकी मुम्लकत के असक़ाल के हामिल होकर उसके मुआविन (सहायक) रहेंगे।

सुनो ख़त्मुल औलिया होवेगा मौजूद
इमामे आरिफाँ जब होगा मफ़कूद
वही महेदी है सैयद आले अहमद
वह हिन्दी तल्वार है जब वह निगलेगा
वह है ख़ुरशीद हर ज़ुलमत का दाफ़े
वह है बाराने बहारी जब वह बरसे

''अब उसका ज़माना आचुका है और उसका वक़्त तुम पर साया फ़िगान है और चौथा क़र्न (युग) ज़ाहिर होचुका है जो तीन क़ुरूने माज़िया यानि रसूलुल्लाह सल्ला० का क़र्न (युग) फिर उसके क़रीब का क़र्न फ़िर उसके क़रीब के क़र्न से लाहिक़ है।''

महदी अले० के वुज़रा (सहाबा) की सिफ़त में *फ़ुतूहात* के लेखक कहते हैं ''वह रसूलुल्लाह सल्ला० के सहाबा रज़ी० के क़दम बक़दम होंगे, सच कर दिखायेंगे जो अल्लाह से अहद करेंगे और वह अजमी होंगे उनमें अरबी कोई नहोगा, मगर गुफ़तगू करेंगे अरबियत (क़ालल्लाह वक़ाल रसूलुल्लाह सल्ला०) ही के साथ, उनका एक पासबान (रक्षक) होगा जो उनकी जिन्स से नहोगा, कभी उसने अल्लाह की नाफ़रमानी न की होगी और वह अख़स्स वुज़रा और अफ़ज़ल उमना होगा इस लिये कि महेदी अले० अहले ज़माना पर अल्लाह की हुज्जत होकर आयेंगे और यही वह दर्जा है जिस में अम्बिया अले० के साथ मुशारिकत (सहभागिता) वाक़े होती है। अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्ला० की तरफ़ से फ़रमाया है कि *''बुलाता हूँ मै अल्लाह की तरफ़ बीनाई पर और वह भी (बुलाएगा) जो मेरी इत्तिबाअ करेगा''* (१२:१०८)। आँहज़रत सल्ला० की इत्तिबा करने वालौं मे महेदी अले० (ख़ास ताबे ताम) हैं, क्योंकि आँहज़रत सल्लाद से दाअवत इलल्लाह में ख़ता नहीं हुवी, पस आप के इस मुत्तबअ (अनुकर्ता) (ताबेअ ख़ास) से भी ख़ता नहीं होगी, इस लिये कि वह आँहज़रत सल्ला० के क़दम बक़दम रहेंगे और ऐसा ही हदीस में भी आया है सिफ़ते महेदी में कि आँहज़रत सल्ला० ने फ़रमाया कि वह मेरे क़दम बक़दम रहेगा और ख़ता नहीं करेगा और दाअवत इलल्लाह में यह वह दर्जाए इस्मत (सतीत्व) दावत इलल्लाह में जिसके

बहुत सारे औलिया-अल्लाह बल्कि सब के सब इच्छुक रहे। यह महेदी अले० ही की शान है कि ग़ुस्सा नहीं करेंगे मगर अल्लाह के लिये बर्ख़िलाफ़ उस शख़्स के जो अपने ख़ाहिशे नफ़्स के लिये और अपनी ग़र्ज़ की मुख़ालिफ़त पर ग़ज़ब में आता हो। महेदी अले० न जानेंगे इल्मे क़ियास (अनुमान) को कि उसके ज़रीये हुक्म करें, अलबत्ता उसको जानेंगे ताकि उसके ज़रीये जवाब दें। पस महेदी सिर्फ़ उसी बात का हुक्म करेंगे जिसको ज़ाहिर करदे उनपर फ़रिश्ता अल्लाह की तरफ़ से जिसको अल्लाह तआला भेजेगा ताकि वह महेदी को राहे रास्त पर रखे। महेदी अले० जो हुक्म करेंगे वही शर्अ हक़ीक़ी मुहम्मदी होगा, ऐसा कि अगर मुहम्मद सल्ला० ज़िन्दा होते और वह मुक़द्दमा आप सल्ला० के पास पेशा किया जाता तो आप वही हुकम फ़रमाते जो यह इमाम अले० हुक्म करते। पस अल्लाह ही उसको इस बात से आगाह करेगा कि वही हुक्मे शर्अ हक़ीक़ी मुहम्मदी है। पस इमाम महेदी अले० पर इल्मे क़ियास हराम होगा ऐसी क़तई दलीलौं के साथ जो अल्लाह तआला उन्हें अता करेगा। इसी लिये महेदी अले० की सिफ़त में नबी सल्ला० ने फ़रमाया है कि वह मेरे क़दम बक़दम होगा और ख़ता नहीं करेगा। पस हमने पहचान लिया कि महेदी अले० मुत्तबअ (नबी सल्ला की शरीअत में इत्तिबा करने वाले) हैं मुशर्आ (नई शरीअत लाने वाले) नहीं हैं। यह भी कहा है कि जो इल्म महेदी अले० को होगा अस्हाबे रूसुम (ज़ाहिर प्रस्त उलमा) में से किसी को नहोगा। (वह क़ौल साहबे फ़ुतूहात का यह है) और अस्हाबे रुसूम (ज़ाहिर प्रस्त उलमा) के लिये यह मर्तबा नहीं, इस लिये कि उनका इल्म हासिल करना मर्तबा, हुकूमत की मुहब्बत और अल्लाह के बन्दौं पर तक़द्दुम (प्रधानता) हासिल करने के लिये होता है

और इस ग़र्ज से कि लोग उनके मुहताज हों, पस न तो वह ख़ुद ही नजात पा सकते हैं और न उनके ज़रीये किसी को राहे नजात (मुक्ति) मिल सकती है। यह हालत तो ज़माने के उन फ़ुक़हा की है जो मन्सबौं (पद) यानि क़ज़ात, अदालत, कोतवाली और तदरीस (पढ़ाना) की रग़्बत (रुचि) रखते हैं। अब रहे उनमें दीनदारी में मुमताज़ (मान्य) शुयूख़े वक़्त तो वह अपने शांति के कोनौं में जमा रहते हैं, लोगौं को कोरी नज़र से आजिज़ी और पारसाई के अन्दाज़ में देखते हैं और अपने होंटौं को ज़िकर के साथ हरकत देते रहते हैं ताकि उनकी तरफ़ देखने वाला यह समझे कि वह ज़िकर में मश्ग़ूल हैं, अपने कलाम में बात-बात पर तआज्जुब करते और बात-बात पर ज़ोर देते हैं, नफ़्स की सरकशी और ख़ुद पसन्दी की सिफ़त उनपर ग़ालिब हो जाती है, उनके दिल भेड़ियौं के दिल हैं, अल्लाह उनकी तरफ़ नहीं देखता। यह हाल उलमा में इम्तियाज़ (विशेषता) रखने वालौं का है जो शयातीन के हमनशीन हैं, अल्लाह को उनसे कोई सरोकार नहीं। ज़ाहिरी तौर पर नरम मिज़ाजी से बक्री के पोस्तीन पहने हुवे हैं, बज़ाहिर बिरादर बबातिन सितमगर हैं।

जब इमाम महेदी अले० निकलेंगे तो फ़ुक़हा के सिवाय कोई उनका खुला दुश्मन नहीं होगा ख़ुसूसन् क्योंकि उनकी रियासत (सत्ता) बाक़ी नहीं रहेगी और न अवाम में उन लोगौं की शोहरत रहेगी बल्कि उनका इल्म ही बाक़ी न रहेगा मगर थोड़ा जिस से हुक्म करें। अहकाम में जो इख़तिलाफ़ वाक़े हुवा है इस इमाम के वजूद से वह आलम से उठ जायेगा। अगर तलवार उसके हाथ में न हो तो फ़ुक़हा उसके क़तल का फ़त्वा देदें और जब वह हुक्म करे उन

(उलमा) के मज़्हब के खिलाफ़ तो उनका यह एतक़ाद होगा कि वह (महेदी अले०) उस हुक्म में गुमराही पर है, क्योंकि उनका यह एतक़ाद होगा कि इज्तिहाद का ज़माना ख़तम होचुका है और उनके अइम्मा के बाद कोई ऐसा शख़्स नहीं पाया जाएगा जो इज्तिहाद का दर्जा रखता हो।

अगर कोई शख़्स अहकामे शरईया की मुवाफ़िक़त के साथ अल्लाह की तरफ़ से माअरिफ़त पाने का दावा करे तो वह उन (फ़ुकहा) की नज़र में दीवाना फ़ासिदुल ख़याल (दूषित विचार वाला) है। उसकी तरफ़ कोई तवज्जह नहीं करेंगे, हाँ अगर वह साहबे दौलत या साहबे सल्तनत हो तो फ़ुक़हा ज़रूर उसके मुतीअ व मुन्क़ाद (अधीन) होंगे बज़ाहिर उसके माल की रग़बत में या उसकी सलतनत के ख़ौफ़ से।

दूसरी हदीसें और रिवायतें जो हज़रत महेदी अले० के हक़ में साबित हुई हैं असलाफ़ (पूर्वजौं) की किताबों में बहुत हैं मगर तहरीर की दराज़ी के लिहाज़ से इख़्तिसार से काम लिया गया है और चंद कलिमात किताबत में लाये गये हैं उन अश्ख़ास की तसल्ली की ख़ातिर जो हज़रत महेदी अले० की सुहबत से मुशर्रफ़ नहीं हुवे और बयाने क़ुरआन और हुज्जते महेदियत आप अले० की ज़बान से नहीं सुने हैं, क्योंकि हक़ तआला ने अपने कलामे पाक में यह ख़बर दी है

* *''फिर तहक़ीक़ हमारे ज़िम्मे है बयान उसका''* (७५:१९)

* यानि महेदी अले० की ज़बान से क़ुरआन का बयान। दूसरी आयतौं को भी आप अले० न हुज्जत में पेश फ़रमाया है। चुनांचे हक़ तआला फ़रमाता है

* *''क्या वह शख़्स जो अपने रब् की तरफ़ से रोशन दलील पर है, उसके पीछे अल्लाह की तरफ़ से उसके लिये गवाह (क़ुरआन) भी आ गया, और उस से पहले मूसा की किताब इमाम और रहमत की हैसियत से मौजूद थी, यह सब उस पर ईमान लाते हैं और जमाअतौं में से जो कोई उसका इन्कार करेगा तो दोज़ख़ उसका ठिकाना है। पस तुम (ए मुहम्मद) उसके बारे में किसी शक में न पड़ो। बेशक यह हक़ है तुम्हारे रब की तरफ़ से मगर अकसर लोग उस पर ईमान नहीं लायेंगे''* (११:१७)। यह आयत आगे इस आयत तक है। *''इन दोनों फ़रीक़ौं की मिसाल ऐसी है जैसे एक अंधा और बहरा है और दूसरा देखने और सुनने वाला। क्या यह दोनों बराबर होंगे। क्या तुम ग़ौर नहीं करते''* (११:२४)।

* *कहदो (ए मुहम्मद) यह मेरा रास्ता है, मैं बुलाता हूं अल्लाह की तरफ़ बीनाई पर, मैं और वह भी (बुलाएगा) जो मेरा ताबेअ होगा। और अल्लाह पाक है और मैं मुश्रिकीन में से नहीं हूं* (१२:१०८)।

* *कहो कौनसी चीज़ गवाही के लिहाज़ से बड़ी है, कहदे कि तुम्हारे और मेरे दर्मियान अल्लाह गवाह है, और वही किया गया है मेरी तरफ़ यह क़ुरआन ताकि तुम को डराऊं उसके ज़रीये और वह भी डरायगा जो (मेरे मक़ाम और मर्तबे को) पहुंचे* (६:१९)।

* *(ऐ मुहम्मद) अगर वह तुम से हुज्जत करें तो कहदो कि मैं ने अल्लाह के आगे अपना सरे तस्लीम ख़म् कर दिया है और वह भी जो मेरा ताबेअ है* (३:२०)।

* *और इसी तरह हमने भेजा तुम्हारी तरफ़ रूह को अपने हुक्म से। तुम नहीं जानते थे कि किताब क्या है और न यह जानते थे कि ईमान क्या है, मगर हमने उस रूह को नूर बनाया, उस से हम हिदायत देते है अपने बन्दौं में से जिसे चाहते हैं। और बेशक तुम एक सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई कर रहे हो* (४२:५२)।

**फिर हमने किताब का वारिस बनाया उन लोगौं को जिन्हें हमने अपने बन्दौं में से चुन लिया। पस उनमें से कुछ अपने नफ़्स पर ज़ुल्म करने वाले हैं और उनमें से कुछ बीच की चाल पर हैं। और उनमें से कुछ अल्लाह के हुक्म से नेकियौं में सबक़त (अग्रसरता) करने वाले हैं। यही सब से बड़ा फ़ज़्ल है। जन्नत के बाग़ है जिन में यह लोग दाख़िल होंगे, वहाँ उन्हें सोने और मोती के कंगन पहनाए जाएंगे, और वहाँ उनका लिबास रेशमी होगा, और वह कहेंगे सब ताअरीफ़ अल्लाह के लिये है जिसने हमसे ग़म को दूर किया। बेशक हमारा रब माफ़ करने वाला, क़द्र करने वाला है। जिसने हमें अपने फ़ज़्ल से आबाद रहने के घर में उतारा इस में हमें न कोई मशक़्क़त पहुंचेगी और न कभी थकान लाहिक़ होगी* (३५:३२-३५)।

* *बेशक आसमानौं और ज़मीन के पैदा करने में और रात दिन के बारी-बारी आने में उन अक़्ल वालौं के लिये बहुत निशानियाँ हैं। जो खड़े और बैठे और लेटे अल्लाह को याद करते हैं और आसमानौं और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते रहते हैं (और बे इख़तियार बोल उठते हैं कि) ऐ हमारे रब तुने यह सब बेमक़्सद नहीं बनाया है। तेरी ज़ात पाक है, पस हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा। ऐ हमारे रब तूने जिसे आग में डाला पस*

तूने उसे रूसवा करदिया और ज़ालिमौं का कोई मदद्गार नहीं। ऐ हमारे रब हमने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की मुनादी कर रहा था कि अपने रब पर ईमान लाओ, पस हम ईमान लाये। ऐ हमारे रब हमारे गुनाहौं को बख़्श दे और हमारी बुराइयौं को हमसे दूर कर दे और हमारा ख़ात्मा नेक लोगौं के साथ कर। ऐ हमारे रब तूने जो वादे अपने रसूलौं के ज़रिए इमसे किये हैं उन्हें हमारे साथ पूरा कर और क़ियामत के दिन हमें रूसवाई में न डाल। बेशक तू अपने वादे के ख़िलाफ़ करने वाला नहीं है। उनके रब ने उनकी दुआ क़ुबूल फ़रमाई कि मैं तुममें से किसी अमल करने वाले के अमल को ज़ाये करने वाला नहीं, चाहे वह मर्द हो या औरत, तुम सब एक - दूसरे से हो। पर जिन लोगौं ने हिजरत की और जो अपने घरौं से निकाले गये और मेरी राह में सताये गये और लड़े और मारे गये उनकी ख़ताऐं ज़रूर उनसे दूर कर दूंगा और उन्हें ऐसे बाग़ौं में दाख़िल करूंगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। यह उनका बदला है अल्लाह के यहाँ और बेहतरीन बदला अल्लाह ही के पास है (३:१९०-१९५)।

* *वही है जिसने उम्मियौं में एक रसूल उन्ही में से भेजा, जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है। और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब (क़ुरआन) और हिक्मत की तालीम देता है, और वे इस से पहले खुली गुमराही में थे। और उनमें से आख़िरीन (दूसरौं)* (1) *में (पैग़मबर यानि अपना ख़लीफ़ा भेजेगा) जो अभी उनसे नहीं मिले, और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है। यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, वह देता है जिसे चाहता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है* (६३:२-४)।

दूसरी बहुत सी आयतें हैं जो हज़रत महेदी अले० के सिद्क़ (सत्यता) पर दलालत करती हैं और सहाबा रज़ी० के बेशुमार अक़वाल भी हैं जो आप की महेदियत के सुबूत और और उसकी सिहत के गवाह हैं। चुनांचे अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली कर्रमुल्लाहु वज्हहु फ़रमाते हैं।

(अरबी अश्आर का अनुवाद)

ऐ मेर बेटे जब तुर्क हमला करें तो महेदी का इन्तेज़ार कर
महेदी की विलायत क़ाइम होगी और वह अदल (न्याय) करेगा
आले हाशिम में से ज़ालिम सलातीन अपमानित होंगे
और बैअत किया जाएगा उनमें से वह
जो निर्बल और उत्साह हीन होगा
बच्चौं में से एक बच्चा होगा जो निर्विचार होगा
उसके पास न कोई कोशिष होगी और न वह साहबे अक़ल होगा
फिर तुम में से एक हक़ को क़ाइम करने वाला ज़ाहिर होगा
और हक़ के साथ तुम्हारे पास आएगा और हक़ पर अमल करेगा
वह रसूलुल्लाह सल्ला० का हम-नाम होगा मेरी जान उसपर फिदा हो
ए मेरे बच्चो तुम उसको मत छोड़ो और बैअत करने में जल्दी करो (2)

काफ़ी है हमारे लिये अल्लाह और वह बेहतर कार साज़ बेहतर मददगार है।

(1) *हज़रत मियाँ अब्दुल ग़फूर सुजावंदी रहे० ने रिसाला हज़दा आयात में इस आयत की तफ़सीर में लिखा है कि हज़रत इमाम महेदी मौऊद अले० ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म फ़रमाया है कि 'आख़िरीन मिन्हुम' से मुराद फ़क़त तेरी क़ौम है और 'मिनर-रसूलि मिन्हुम' (उनमें के रसूल) से मुराद तेरी ज़ात है। (रिसाला हज़दा आयात-४६)। इस आयते शरीफ़ा में रसूल मुक़द्दरफ़िल आख़िरीन से मुराद ज़ाते महेदी अले० होना आयत के मज़्मून और हज़रत महेदी अले० के बयान से साफ़ ज़ाहिर है। इसके बावजूद हज़रत महेदी मौऊद ख़लीफ़ तुल्लाह ख़ातिमे विलायते मुहम्मदी मुरादुल्लाह अले० को रसूल या पैग़म्बर कहना जाइज़ नहीं है, क्योंकि रसूल या पैग़म्बर वही ख़लीफ़तुल्लाह कहलाता है जो जदीद किताब या जदीद शरीअत लाये। ख़तिमे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० की शरीअत आख़िरी शरीअत और उनकी किताब आख़िरी किताब है, इस लिये अल्लाह के आख़िरी ख़लीफ़ा महेदी मौऊद जो ख़त्मे विलायते मुहम्मदी के मन्सब पर मामूर हुवे और मज़्हरे ख़ास विलायते मुहम्मदी हुवे आप का लक़ब मुरादुल्लाह हुवा है, यानि काइनात की तख़लीक़ से मुरादे इलाही जो विलायते मुहम्मदी का ज़हूर था उसकी तकमील आप अले० की ज़ात मे हुई है, इसी वज्ह से मुहाक़िक़ीन ने आप को मुरादुल्लाह कहा है। इस बाब में कि ख़ातिमुल अम्बिया और ख़ातिमुल औलिया अले० के बाद किसी को रसूल या पैग़म्बर या नबी या वली कहना जाइज़ नहीं है हज़रत महेदी अले० का साफ़ व सरीह फ़रमान मनक़ूल है।*

(2) *इस ज़बर्दस्त पेशीन गोई से हमारे महेदी अले० के दावे की सिहत और सुबूत साफ़ ज़ाहिर है। तारीख़ (इतिहास) में लिखा है कि तुरकौं की जेश-कशी (सैनिक आक्रमण) का ज़ोर आठ सै हिज्री से शूरु हुवा और ८५७ हिज्री में क़ुस्तुन् तुन्या फ़तह होगया। उसी ज़माने में ख़ुलफ़ाए बनी अब्बास के बादशाह जो आले हाशिम से थे ज़लील व ख़ार हुवे, चुनांचे अल्लामा सुयूती ने उनके आख़िरी ख़लीफ़ा का जो ज़िकर किया है १०३ हिज्री में वफ़ात पाया है, उसके बाद उनकी ख़िलाफ़त का भी ख़ातिमा हो गाया। १०५ हिज्री में हमारे इमाम महेदी अले० की दावत है जो आले रसूल सल्ला० और औलादे अली रज़ी० से हैं और रसुलुल्लाह सल्ला० के हम-नाम हैं। पस यह अशआर हमारे महेदी अले० की सदाक़त की बड़ी दलील हैं।*